•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण मेवाड़ की ओर

९ मार्च। प्रातः दायित्व हस्तान्तरण कार्यक्रम में मेवाड़ व अन्य क्षेत्रों के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। रात्रि में स्वागत का अवशिष्ट कार्यक्रम चला। श्रोताओं को पूज्यवर का प्रेरक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

माहेश्वरी इंटरनेशनल स्कूल में

१० मार्च। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आर. के. कम्युनिटी हॉल से प्रस्थान कर लगभग चार किमी. का चक्कर लेकर मार्बल सिटी अस्पताल में श्री सुरेश मेहता को दर्शन दिए। तत्पश्चात तेरापंथ भवन होते हुए आचार्यवर माहेश्वरी इंटरनेशनल स्कूल में पधारे। पूज्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'साधु का जीवन सहिष्णु और प्रयोगधर्मा होना चाहिए। अनुकूल और प्रतिकूल सभी परिस्थितियों को झेलने का अभ्यास होना चाहिए। जो हमारे प्रति बुरा और अनिष्ट सोचता है, उसके प्रति भी हम मंगलभावना रखें। जीवन में अहिंसा की प्रतिष्ठा होने पर पारस्परिक वैर भाव भी छूट सकता है। हम प्राणिमात्र के प्रति शुभ और कल्याण की भावना रखें।'

कार्यक्रम में किशनगढ़ (मदनगंज) में चातुर्मास संपन्न करने वाली साध्वी मधुबालाजी ने अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत के माध्यम से अपने श्रद्धासिक्त भावों को अभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेयुप के सदस्यों ने भी गीत का संगान किया। माहेश्वरी इंटरनेशनल स्कूल के प्राचार्य श्री ताराचन्दजी माहेश्वरी ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

११ मार्च। आज १० किमी. का विहार कर पूज्य आचार्यवर गंगवाना पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में रहा। पूज्यवर मध्यवर्ती प्रेसिडेंसी स्कूल में भी पधारे। वहां आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में स्कूल के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रसिंह सिंघवी ने सपरिवार आचार्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। श्रीमती नीलम सिंघवी ने स्वागत में सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में कहा 'इस स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थी अपने परिवार व समाज के लिए समस्या का निराकरण करने वाले बनें।'

गंगवाना में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में जीवनविज्ञान निबन्ध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। यह प्रतियोगिता जीवनविज्ञान अकादमी लाडनूं के द्वारा भोजराज धनराज पटावरी कल्याण ट्रस्ट के प्रायोजकत्व में आयोजित की गई थी। पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का प्रारंभ मुनि नीरजकुमारजी के गीत संगान से हुआ। प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलालजी ने कार्यक्रम के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

जीवनविज्ञान प्रशिक्षक श्री हनुमान शर्मा ने प्रतियोगिता के संदर्भ में विस्तार से अवगति दी। जैविभा के कुलपति श्री झूमरमलजी बैंगानी ने विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ ने संभागियों के प्रति आभार ज्ञापित किया। स्थानीय विद्यालय के प्राचार्य श्री कृष्ण गोपाल वैष्णव ने पूज्यवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा 'भारतीय विचारधारा में पूर्वजन्म और पुनर्जन्म की अवधारणा है। इस अवधारणा के अंतर्गत आत्मा के त्रैकालिक अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। भारतीय दर्शन में आस्तिक और नास्तिक ये दो विचारधाराएं रही हैं। धर्म की साधना का एक बड़ा आधार पुनर्जन्म की अवधारणा है। साधक अपनी विशिष्ट साधना के द्वारा जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। हर व्यक्ति का यह प्रयास हो कि वह आत्मा को पाप कर्मों के द्वारा मलिन होने से बचाए।'

जीवनविज्ञान प्रतियोगिता के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा 'जीवनविज्ञान ऐसा उपक्रम है, जो बच्चों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनके भावात्मक विकास पर भी बल देता है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के आचरण में सकारात्मक परिवर्तन आए, जीवनविज्ञान के प्रयोग इसमें बहुत सहायक हैं।'

कार्यक्रम का संयोजन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

आज सायं अजमेर के हिन्दू संत स्वामी कृष्णानंदजी आचार्यवर से मिले और विविध विषयों पर पूज्यवर से वार्तालाप किया। ज्ञानगच्छ के लक्ष्मी मुनि और राजेश मुनि का भी रात्रिकालीन प्रवास आज यहीं रहा। मुनिद्वय ने आचार्यप्रवर एवं संतों से तात्विक और परंपरागत विषयों पर मुक्त भाव से चर्चा की।

ख्वाजा की नगरी में भव्य स्वागत

१२ मार्च। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज गंगवाना से विहार कर घूघरा घाटी होते हुए ख्वाजा की नगरी अजमेर पधारे। सेशन कोर्ट से प्रारंभ भव्य एवं व्यवस्थित जुलूस के साथ पूज्यवर पटेल मैदान के सामने स्थित डाक बंगले

में पहुंचे। आजका रात्रि प्रवास यहीं रहा। राजस्थान के पूर्व मंत्री व विधायक श्री वासुदेव देवनानी, अजमेर विकास प्रन्यास के पूर्व चेयरमेन श्री रमेश जैन सहित अनेक गणमान्य व विशिष्ट लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया और जुलूस में शामिल हुए।

आजाद पार्क में निर्मित भव्य एवं विशाल प्रवचन पंडाल में पहुंच कर जुलूस स्वागत सभा के रूप में परिणत हो गया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के मंगल उद्‌बोधन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अहिंसा यात्रा के उद्‌देश्यों की विशद अवगति देते हुए लोगों को पूज्यवर के इस प्रवास का अधिकाधिक लाभ उठाने की प्रेरणा दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'अनावश्यक न बोलना सबसे बड़ा मौन है। साधक वाक् शक्ति का दुरुपयोग न करे। वह वाणी के दोषों से बचने का प्रयास करे। संयमित व सारपूर्ण बोलना वाणी का विवेक है। वाग्मी वह होता है, जो संयमपूर्ण भाषा बोलता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'पारिवारिक विघटन का एक कारण है परस्पर का वैमनस्य और कलह। परिवार में सौहार्द और सौमनस्य का वातावरण रहे, इसके लिए संकल्प, अनुप्रेक्षा के अभ्यास से कलह का उपशमन करें।'

जापान में आए भयंकर भूकंप व उससे उत्पन्न सुनामी के महाविनाश के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा 'जापान इस समय प्राकृतिक आपदा की विभीषिका को झेल रहा है। वहां की जनता को हमारा संदेश है इस कठिन घड़ी में वह अपना मनोबल और धैर्य बनाए रखे। आध्यात्मिक चिंतन करते हुए आपदा का समाधान खोजे।'

जोबनेर में चातुर्मास संपन्न कर गुरु दर्शनार्थ पहुंची साध्वी सरस्वतीजी ने सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति दी।

पूज्य आचार्यवर ने कहा 'साध्वी सरस्वतीजी अच्छा काम करने वाली साध्वी हैं। हमारी साध्वियां कार्य के द्वारा अपने कर्तृत्व को उजागर करती हैं। यथाशक्ति संघ की सेवा करती हैं।' इस अवसर पर मुनि किशनलालजी का प्रासंगिक वक्तव्य हुआ। श्री जीतमलजी छाजेड़ ने सपत्नीक आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर पूज्यवर का त्यागमय स्वागत किया। कार्यक्रम में तेरापंथी ही नहीं, जैन-अजैन भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

स्वागत का कार्यक्रम रात्रि में आयोजित हुआ। अनेक व्यक्तियों और संस्थाओं के पदाधिकारियों ने गीत, कविता और वक्तव्य के द्वारा अपने श्रद्धासिक्त भावों को अभिव्यक्ति दी। आचार्यप्रवर ने वहां उपस्थित सभी परिवारों को विशेष धार्मिक अभिप्रेरणा प्रदान करते हुए कहा 'यहां के ५१ परिवारों का सब प्रकार के नशे से मुक्त होना महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय बात है।'

अजमेर का एकदिवसीय प्रवास सुखद और कार्यकारी रहा। स्व. श्रीमती हंगामीदेवी (धर्मपत्नी-श्री पुखराजजी गेलड़ा, हरनावां) की स्मृति में श्री माणकचन्द मदनलाल महावीरप्रसाद, विमलकुमार, अशोककुमार गेलड़ा के सौजन्य से किशनगढ़ से अजमेर तक साहित्य अर्द्धमूल्य में उपलब्ध रहा। साहित्यप्रेमियों ने इस छूट का पूरा लाभ उठाया।

दरगाह से अहिंसा का पैगाम

१३ मार्च। आज प्रातः डाक बंगले से प्रस्थान कर आचार्यप्रवर सुन्दर विलास क्षेत्र में स्थित तेरापंथ भवन पधारे। वहां से आप श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. धनपतकंवर लोढ़ा के आवास पर पधारे। उनके दत्तकपुत्र श्री प्रकाशमलजी लोढ़ा ने सपरिवार पूज्यवर का स्वागत किया।

मध्यवर्ती कई स्थलों को स्पर्श करते हुए आचार्यप्रवर ख्वाजा मोइनुद्‌दीन चिश्ती की दरगाह परिसर में पधारे। वहां अंजुमन कमेटी के प्रमुख गुलाब किबरिया चिश्ती व दरगाह के खादिमों ने अहिंसा यात्रा के साथ आचार्यप्रवर का तहेदिल से इस्तकबाल किया।

महान सूफी संत की सुप्रसिद्ध दरगाह में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण का स्वागत करते हुए श्री गुलाब किबरिया ने कहा 'यह जगह सारी दुनिया को मुहब्बत और अमन का पैगाम देती है। अहिंसा यात्रा का भी यही मकसद है। वह सूफी संत प्यार और इंसानियत का दीवाना था और यही उसका पैगाम था। आचार्यश्री महाश्रमण भी इंसानियत और अमन के पैगाम के साथ यहां तशरीफ लाए हैं। इससे सारे जहान में शांति कायम करने में सफलता मिलेगी।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा 'आज हम अहिंसा यात्रा के साथ दरगाह में आए हैं। हमारे गुरु आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ भी यहां पधारे थे। विश्व प्रसिद्ध दरगाह से दुनिया को शान्ति और अहिंसा का पैगाम देते हुए आचार्यवर ने कहा सबमें अहिंसा की चेतना जागे, दया और अनुकंपा की भावना

पनपे और विकसित होती रहे। इंसान की इंसानियत बरकरार रहे, नफरत के भाव उसके दिल में न रहे, मैत्री और भाईचारे की भावना का प्रसार हो तो पूरी दुनिया में अहिंसा और शान्ति चिरस्थायी हो सकती है।

दरगाह से प्रस्थान कर आचार्यप्रवर मार्गवर्ती अनेक घरों और प्रतिष्ठानों में पधारे। आदर्शनगर में श्री महावीर स्थानकवासी जैन श्रावक समिति के कार्यकर्ताओं ने पूज्यवर का स्वागत किया। लगभग दस किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर मोखूपुरा पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय में हुआ।

आज का प्रातःकालीन कार्यक्रम महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के सान्निध्य में आयोजित था। प्रवचन से पूर्व साध्वी विवेकश्रीजी एवं साध्वी अनुशासनाश्रीजी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा 'अहिंसा यात्रा का उद्देश्य है अनुकंपा की चेतना का विकास। अनुकंपा के विकास का मतलब है अहिंसा का विकास। जीवन का कोई लक्ष्य बनाएं और उस दिशा में पुरुषार्थ करें। इसी में जीवन की सार्थकता है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा 'यह संसार अध्रुव, अशाश्वत और अनित्य है। संसारी प्राणी की भी यही नियति है। इस धरती पर कुछ लोग स्वर्गिक जीवन जीते हैं तो कुछ लोग नारकीय जीवन बिताते हैं। यह व्यक्ति के अपने हाथों में है कि वह कैसा जीवन जीना चाहता है। गुरु मार्गद्रष्टा होते हैं। उनके बताए मार्ग पर चलकर इहलोक के साथ परलोक का पथ भी प्रशस्त किया जा सकता है। धर्म आत्मशुद्धि का साधन है। धर्म के द्वारा प्रासंगिक फल भी मिल सकता है।'

प्रवचन के पश्चात महिला मण्डल ब्यावर की बहनों ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी शुभप्रभाजी ने किया।

हनुमान घाटी में मेवाड़ की आहट

१४ मार्च। आज प्रातः परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने नसीराबाद की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती हनुमान घाटी मेवाड़ के नैकट्य का संकेत दे रही थी। ऊंची-ऊंची पहाड़ियां और घुमावदार सड़क मेवाड़ की आहट प्रतीत हो रही थीं। नसीराबाद के समीप सड़क के दोनों ओर सैनिकों की सघन छावनी राहगीरों का ध्यान अपनी ओर सहज ही आकृष्ट कर रही थी। लगभग चौदह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर नसीराबाद कस्बे में पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय व्यापारिक उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। प्राप्त जानकारी के अनुसार नसीराबाद में श्वेताम्बर जैन समाज के चौंतीस घर हैं। आचार्यवर के पदार्पण से स्थानीय लोगों में हर्ष और उल्लास का वातावरण था।

विद्यालय के प्राचार्य श्री इकराम कुरेशी ने विद्यालय परिवार की ओर से आचार्यवर का स्वागत किया। उल्लेखनीय है विद्यालय में तीन दिन बाद होने वाली बोर्ड की परीक्षाओं के लिए व्यवस्थागत तैयारी आज से ही करनी थी, किन्तु प्राचार्यश्री कुरेशी ने उन तैयारियों को रोक कर संपूर्ण विद्यालय परिसर अहोभाव के साथ अहिंसा यात्रा के लिए समर्पित कर दिया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा 'पापभीरु के मन में कर्म बंधन का भय होता है। जो आश्रव का निरोध कर लेता है, इन्द्रियों का दमन कर लेता है, वह पाप कर्म के बंधन से बच जाता है। धर्म का सार है जो व्यवहार तुम्हारे लिए अप्रिय है, वैसा व्यवहार तुम दूसरों के साथ मत करो। जो सभी प्राणियों को अपने समान समझ लेता है, वह पाप कर्म से बच सकता है।'

उपस्थित जैन समाज को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा 'जैन समाज के लोगों में त्याग-प्रत्याख्यान की चेतना का विकास हो। बारह व्रतों को धारण करने का प्रयास हो तो जीवन कृतार्थ हो सकता है।'

१५ मार्च। आज प्रातः लगभग पन्द्रह किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'झड़वासा' पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में रहा।

प्रातःकालीन प्रवचन में पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा 'ज्ञान और आचार इन दो शब्दों का प्रयोग यदा-कदा होता रहता है। आगम में कहा गया है पहले ज्ञान, फिर आचार। यदि ज्ञान सम्यक नहीं है तो सम्यक आचार की अनुपालना भी कठिन है। अज्ञान दुःख का कारण है। जैन तत्त्व विद्या में ज्ञान के अभाव के साथ-साथ मिथ्या ज्ञान को भी अज्ञान कहा गया है। हमारी आत्मा अज्ञान से ज्ञान की ओर प्रयाण करे तो कल्याण का पथ प्रशस्त हो सकेगा।'

१६ मार्च। आज प्रातः लगभग तेरह किमी. का विहार कर आचार्यवर 'खेड़ी' पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ। मार्ग में बान्दनवाड़ा कस्बे के जैन स्थानक में भी आचार्यवर पधारे। यहां स्थानकवासी सुदर्शन मुनिजी की शिष्या साध्वी कमलप्रभाजी आदि छह साध्वियों ने आचार्यवर का अभिवादन किया। साध्वियों ने पूज्यप्रवर से संक्षिप्त वार्ता भी की। ग्रामवासियों को आचार्यवर ने संक्षिप्त उद्बोधन प्रदान किया। कस्बे में लगभग

चालीस जैन परिवार हैं।

खेड़ी के विद्यालय परिसर में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा 'व्यक्ति कल्याण और पाप इन दोनों मार्गों के बारे में सुनकर जानता है और समझता है। जानने व समझने के बाद प्रश्न उपस्थित होता है कि उसे क्या करना चाहिए? जानना ज्ञान है। ज्ञान आंख है, प्रकाश है। ज्ञान के बाद आचरण की बात आती है। आंख के अभाव में अंधा देख नहीं पाता, पंगु चल नहीं पाता। आंख और पांख दोनों हो तो वह समग्रता है। ज्ञान के साथ आचार की समन्विति व्यक्ति को अर्हतासंपन्न बनाती है।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'आज टीवी चैनलों पर संत-महात्माओं के प्रवचन प्रसारित होते हैं। सीडी और कैसेटों के माध्यम से भी संतों की वाणी सुनने को मिल जाती है। इससे सत्संग सुलभ बन गया है। कौन कितना लाभ उठाता है, यह विचारणीय प्रश्न है। अपेक्षा है धर्म के मर्म को सुनें, समझें और सत्पथ पर बढ़ें, श्रेय के मार्ग पर चलें।'